# चंद्रशेखर आजाद का चरित्र चित्रण

**उत्तर : डॉ० जयशंकर त्रिपाठी** कृत **'मातृभूमि के लिए'** खण्डकाव्य के नायक चन्द्रशेखर 'आजाद' एक क्रान्तिकारी हैं। एक सच्चे क्रान्तिकारी में जो गुण अथवा विशेषताएँ होनी चाहिए, वे सभी चन्द्रशेखर 'आजाद' के व्यक्तित्व में दृष्टिगत होती हैं। चन्द्रशेखर 'आजाद' प्रारम्भ से ही होनहार युवक थे। इनका जन्म उस समय हुआ, जब भारतीय नेता स्वतन्त्रता-संग्राम के लिए सर्वस्व न्योछावर करने में लगे हुए थे। चन्द्रशेखर 'आजाद' का व्यक्तित्व अतुलित गुणों का भण्डार था। प्रस्तुत खण्डकाव्य के आधार पर उनके प्रमुख चारित्रिक गुणों का वर्णन इस प्रकार किया जा सकता है—

**(1) आकर्षक व्यक्तित्व**—चन्द्रशेखर 'आजाद' का आन्तरिक तथा बाह्य व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली तथा आकर्षक था। जितना इनका शरीर हृष्ट-पुष्ट तथा बलशाली था, उतना ही इनका स्वभाव मधुर था। चन्द्रशेखर का व्यक्तित्व प्रारम्भ से ही सर्वप्रिय था। कवि ने उनके व्यक्तित्व की प्रशंसा इन शब्दों में की है—

**''पर बालक वह अंगारा था—आँखों में उग्र उजाला था।''**

**(2) देशभक्त तथा परम उत्साही**—चन्द्रशेखर 'आजाद' ने अपने विद्यार्थीकाल से ही अंग्रेजों के अत्याचारों को देखा था। उन्होंने अपनी आँखों के सामने ही भारतवर्ष की स्वतन्त्रता के दीवानों को बलिवेदी पर चढ़ते देखा था। इसलिए चन्द्रशेखर 'आजाद' ने पुस्तकों का अध्ययन छोड़कर स्वतन्त्रता-संग्राम में कूदने का निश्चय किया। आजाद में भारत को स्वाधीन कराने का परम उत्साह था। उन्होंने देश की आजादी के लिए अनेक कष्ट सहे। देशभक्ति की भावना उनमें कूट-कूटकर भरी हुई थी। युवकों के लिए उनके पास एक ही नारा था यही एक प्रेरणा थी—

**ऐसे ही भंग हुकूमत हो, माता की बेड़ी काट चलो।**
**सूत्रों को रटना छोड़ो तुम, अब स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ो॥**

× × ×

**सम्मान हेतु लड़ना होगा, आजाद राष्ट्र करना होगा।**
**यह प्रश्न चुनौती जीवन की, जीना होगा, मरना होगा॥**

**(3) दृढ़निश्चयी**—चन्द्रशेखर 'आजाद' ने भारतमाता के कष्टों को देखकर यह दृढ़ निश्चय किया कि जब तक भारतमाता आजाद नहीं होगी, तब तक मैं चैन से नहीं बैठूँगा। देश की आजादी के लिए मैं अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दूँगा। आजाद के हृदय में केवल एक ही बात थी, जिसको कवि ने इस प्रकार चित्रित किया है—

**इस जन्मभूमि के लिए प्राण, मैं अपने अर्पित कर दूँगा।**
**आजाद न होगी जब तक यह, मैं कर्म अकल्पित कर दूँगा।।**

**(4) निर्भीक एवं साहसी**—मात्र पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही चन्द्रशेखर 'आजाद' ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। 'इंकलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाने के एक अभियोग में वे मजिस्ट्रेट के सामने लाए गए। मजिस्ट्रेट द्वारा उनका तथा उनके पिता का नाम पूछे जाने पर उन्होंने निर्भीकतापूर्वक अपना नाम 'आजाद' तथा अपने पिता का नाम 'स्वाधीन' बताया। मजिस्ट्रेट; आजाद के निम्नलिखित शब्दों को सुनकर आश्चर्यचकित हो उठा—

**कहते हैं जेलखाना जिसको, बलिदानी वीरों का घर है।**
**हम उसमें रहनेवाले हैं, उद्देश्य मुक्ति का संगर है।।**

**(5) सतत जागरूक क्रान्तिकारी**—यद्यपि आजाद महात्मा गांधी की अहिंसक नीतियों से बहुत प्रभावित थे, तथापि जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड तथा अंग्रेजों की अत्याचारपूर्ण हिंसक नीतियों को देखकर चन्द्रशेखर 'आजाद' का विश्वास भी हिंसक क्रान्ति में बदल गया था। वे अपने इन कार्यों को करते हुए अत्यधिक सचेत रहते थे। उन्होंने गोलियाँ चलाईं, बम बनाए तथा अंग्रेजों को मौत के घाट उतारा। पुलिस सदैव उनके पीछे रहती थी। वे तरह-तरह के वेश बदलकर पुलिस को चकमा देने में प्रवीण थे।

**(6) अमर बलिदानी**—चन्द्रशेखर 'आजाद' ने जो भी संकल्प किया, उसे पूरा कर दिखाया। आजाद के शौर्य एवं पराक्रम की प्रशंसा अंग्रेज भी करते थे।

उन्होंने शत्रु को कभी पीठ नहीं दिखाई। अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से घिर जाने पर भी आजाद ने डटकर उनका सामना किया। जीते-जी वे अंग्रेजों की पकड़ में नहीं आना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने पिस्तौल की अन्तिम गोली अपनी कनपटी पर दाग ली। वे इतने निडर थे कि मृत्यु की गोद में सो जाने पर भी अंग्रेज अफसर उनके समीप जाने का साहस नहीं कर सका। कवि ने इस दृश्य का वर्णन इस प्रकार किया है—

**गिर पड़ा वीर, पर हिम्मत थी, आने की पास नहीं उनकी।**
**कहते थे जीवित होगा यह, क्या जाने गोली कब खनकी॥**

**'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य का प्रतिपाद्य क्या है? प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालते हुए उसके उद्देश्य ( सन्देश/शिक्षा अथवा प्रेरणा ) को स्पष्ट कीजिए।** ***(2007, 08, 09, 10, 12)***

**''मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य शिक्षाप्रद एवं प्रेरणाजन्य है।'' इस आशय की विवेचना कीजिए।** ***(2009)***

**'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य का लक्ष्य एवं निष्कर्ष स्पष्ट कीजिए।** ***(2009)***

**'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य के शीर्षक की सार्थकता बताइए।** ***(2007, 09)***

**'चन्द्रशेखर आजाद का जीवन विराट् संघर्ष और राष्ट्रप्रेम के उदात्त पक्ष का प्रतीक था।'' इस कथन पर प्रकाश डालिए।** ***(2008)***

**'मातृभूमि के लिए' खण्डकाव्य का उद्देश्य लिखिए।** ***(2013)***

**उत्तर : डॉ० जयशंकर त्रिपाठी** द्वारा रचित खण्डकाव्य **'मातृभूमि के लिए'** का प्रतिपाद्य प्रसिद्ध क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद के जीवन-चरित्र के मार्मिक एवं प्रेरक-प्रसंगों को रेखांकित करना है। आजाद का सम्पूर्ण जीवन मातृभूमि के लिए था। वे बाल्यकाल से ही राष्ट्रीय स्वाभिमान के भाव को हृदय में लिए क्रान्तिकारी गतिविधियों में संलग्न हो गए थे। उनका जीवन मृत्युपर्यन्त ब्रिटिश साम्राज्यवाद की निरंकुश शक्ति से संघर्ष करते हुए व्यतीत हुआ। उन्होंने नि:स्वार्थ भाव से मातृभूमि के लिए संघर्ष करने हेतु अपने पारिवारिक, सामाजिक एवं सांसारिक जीवन को त्याग दिया। उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के लिए मर-मिटनेवाले बलिदानी युवक की एक रोमांचपूर्ण कहानी है। इस प्रकार 'मातृभूमि के लिए' किए आजाद के बलिदान के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए इस खण्डकाव्य का नामकरण 'मातृभूमि के लिए' उचित ही किया है। यह **नामकरण सर्वथा सार्थक और औचित्यपूर्ण** है। प्रात:स्मरणीय ऐसे महान् राष्ट्रभक्त के जीवन-चरित्र को अपना प्रतिपाद्य बनाकर कवि ने देश की युवा पीढ़ी को उनके चरित्र से प्रेरणा लेने का सन्देश दिया है—

**स्वाभिमान हित देश के लड़ता है जो वीर।**
**विजय मृत्यु में एक को, लेता है आखीर।**

कवि ने आजाद के सम्पूर्ण जीवन को न लेकर इस खण्डकाव्य में कुछ ऐसे प्रेरक-प्रसंगों को स्थान दिया है, जिनसे राष्ट्र की भावी पीढ़ी को उन उदात्त आदर्शों की प्रेरणा प्राप्त हो सके। इस प्रकार कवि ने आजाद के चरित्र का चित्रण युवा पीढ़ी को उनके आदर्शों से प्रेरणा लेने हेतु किया है और यही इस खण्डकाव्य का उद्देश्य भी है।